

वेस्पर लिब्र

Vesper Libre

Regular| Medium| Bold| Heavy

अआइईउऊऐएऐओ ओओअः। कखगघङचछजझञ टठडढणतथदधन पफबभमयरलळवश-सहळक्षज्ञ श ल 03538686063

क का कि की कु कू कृ कृ के के के के को को को को कं कः क़ू क़ू कें किं कीं कें कैं कां काः की किं कीं कें कैं कैं कें किं कीं क़

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः खृ ख़
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः गृ ग़
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः घ़ घृ घं
च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः चृ
छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः छू छ़ छ़ छ़ छ़ु
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः ज़ जृ
झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः झ झ झ झू ई
ट टा टि टी टु टू टो टौ टं टः ट़ टू र्ट टिं टीं टिं टीं टिं टीं ट्

ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठो ठौ ठं ठः ठ ठू ठं ठिं ठीं ठिं ठीं ठ् ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः ड़ ई डू ड़ ड़् डू डू डू ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढो ढौ ढं ढः ढ़ ढं द्र ढू ढू ढ़ ढ़ ढ़ ढ़ू ढू ण णा णि णी णु णू णे णे णो णो णं णः ण णृ णं त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः त तृ र्त र्तिं र्तीं

थ था थि थी थू थू थे थै थो थौ थं थः थू थ़ र्थ थिं थीं द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः दृ द़ दं द्र दिं दीं ध धा धि धी धी धु धू धे धे धो धौ धं धः ध्र ध्र धीं धीं न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः न नृ न् र्न र्निं नीं प पा पि पी पू पू पे पै पो पौ पं पः प्र पू प् पीं पीं फ फा फि फी फु फू फे फै फो फो फं फः फू फ़ फी फिं फीं ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः ब़ बू र्ब बिं बीं भ भा भि भी भू भू भे भै भो भौ भं भः भू भ र्भ भू भिं भीं म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः मू म र्म य या यि यि यी यू यू ये यै यो यौ यं यः यू य़ र्य र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः र रिं रीं व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः वृ व़ वं ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः लु ल़ र्ल स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः सृ स् ऱ ह हा हि ही हू हू हे है हो हौ हं हः ई हिं हीं ळ ळा ळि ळी ळु ळू ळे ळे ळो ळो ळं ळः ळ ळ ळ ळू ळू

कि	की	
खि	खी	
ाख गि	खा गी	
ाग घि	गा घी	
ाय चि		
	ची ची	
छि	છી -	
जि	जी	
झि	झी	
टि	टी	
ठि	ठी	
डि	डी	
ढि	ढी	
णि	णी	
ति	ती	
थि	थी	
दि	दी	
धि	धी	
नि	नी	
पि	पी	
फि	फी	
बि	बी	
भि	भी	
मि	मी	
यि	यी	
रि	री	
वि	नी वी	
लि	ली	
सि	सी	
हि	ही ही	
ळि	ळी	
100	∞ı	

कि	की	कि	की
खि	खी	खि	खी
गि	गी	गि	गी
घि	घी	घि	घी
चि	ची	चि	ची
छि	छी	छि	छी
जि	जी	जि	जी
झि	झी	झि	झी
टि	टी	टि	टी
ठि	ठी	ठि	ठी
डि	डी	डि	डी
ढि	ढी	ढि	ढी
णि	णी	णि	णी
ति	ती	ति	ती
थि	थी	थि	थी
दि	दी	दि	दी
धि	धी	धि	धी
नि	नी	नि	नी
पि	पी	पि	पी
फि	फी	फि	फी
बि	बी	बि	बी
भि	भी	भि	भी
मि	मी	मि	मी
यि	यी	यि	यी
रि	री	रि	री
वि	वी	वि	वी
लि	ली	लि	ली
सि	सी	सि	सी
हि	ही	हि	ही
ळि	ळी	ळि	ळी

की कि खि खी गी गि घी घि ची चि छी छि जी जि झी झि टी टि ठी ठि डी डि ढी ढि णी णि ति ती थी थि दी दि धी धि नी नि पी पि फी फि बी बि भी भि मि मी यी यि री रि वी वि ली लि सी सि ही हि ळि ळी

Adobe Devanagari

VesperDevanagari

हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र	यि त्रि लि ति सि सि सि	श्रि थि थि दि दि हि	ध्यि ध्यि स्थि स्थि स्थि स्थि	यि क्रि लि सि सि कि	सि फि फि फि फि फि	ष्ठि प्रि फि फि फि फि	श्चि कि कि कि भि
णिण	त्ख्रि	द्धि	न्झि	न्ग्यि	णि	फ्फि	भ्यि
ण्ति	त्ख्रि	द्धी	न्टि	न्स्टि	प्ति	फ्मि	भ्रि
ण्यि	त्खि	द्धि	न्ठि	न्स्यि	थि	फ्यि	भ्लि
प्रि	ल्यि	द्भि	न्डि	न्ह्यि	प्दि	त्री	भ्वि
ण्वि	त्प्रि	द्मि	न्ढि	न्ज्यि	प्धि	फ्लि	भ्र्य
त्कि	त्प्लि	द्मी	न्ति	न्क्सि	प्नि	फ्शि	म्ति
त्खि	त्म्यि	द्यि	न्थि	न्त्यि	प्पि	ब्कि	म्दि
त्ति	त्स्नि	द्रि	न्दि	न्त्सि	प्फि	জ্জি	म्नि
त्थि	त्स्यि	द्वि	न्धि	न्थ्य	प्मि	ब्झि	म्पि
लि	त्स्व	द्ध्यि	ন্নি	न्थ्व	प्यि	ब्टि	म्बि
त्पि	त्स्न्य	ध्कि	न्पि	न्द्रि	प्रि	ब्ठि	म्भि
त्फि	थ्कि	ध्धि	न्फि	न्द्रि	प्लि	ब्डि	म्मि
त्बि	थ्यि	ध्नि	न्बि	न्ध्यि	प्वि	ब्दि	म्यि
त्भि	थ्म	ध्यि	न्भि	न्ध्रि	प्पि	ब्ति	म्रि
त्मि	थ्यि	ध्रि	न्मि	न्प्रि	प्सि	ब्दि	म्लि

म्वि	ল্ডি	श्कि	स्ति	ह्यि
म्शि	ल्टि	श्खि	स्थि	हिंग्य
म्सि	ল্তি	श्चि	स्दि	ह्रि
म्हि	ल्डि	श् छ	स्नि	हि
म्पिय	ल्ढि	श्टि	स्पि	ही
म्प्रि	ल्ति	श्ति	स्फि	ह्लि
म्ब्यि	ल्थि	श्रि	स्बि	ह्री
म्ब्रि	ल्दि	श्बि	स्मि	ह्नि
म्भिय	ल्पि	श्मि	स्यि	ह्यी
म्भ्रि	ल्फि	श्यि	स्रि	ळ्यि
म्भिव	ল্ब	श्रि	स्लि	ळ्पि
य्यि	ल्भि	श्लि	स्वि	ळ्ळि
य्रि	ल्मि	श्वि	स्सि	क्ष्यि
नि	ल्यि	श्शि	स्म्य	क्ष्मि
व्यि	ल्रि	श्र्यि	स्क्रि	क्ष्वि
ब्रि	ल्वि	स्कि	स्त्यि	
व्लि	ल्सि	स्खि	स्थ्य	
व्सि	ल्हि	स्छि	स्म्य	
व्हि	ल्ल्यि	स्जि	स्त्वि	
ल्कि	ल्ह्यि	स्टि	स्प्रि	
ल्खि	ल्क्यि	स्ठि	स्न्य	
ल्गि	ल्थ्यि	स्डि	ह्य	
ल्चि	ल्द्रि	स्ढि	ह्यि	

क्ककखकगकघकङकचकछकजकझकञकटकठकडकढकणकतकथकदकघकनकपकफकबकभकमकयकरकलकवकशकषकसकहक खकखखखगखघखङखचखछखजखझखजखटखठखडखढखणखतखथखदखधखनखपखफखबखभखमखयखरखलखवखशखषखसखहखळख गकगखगगगघगङगचगछगजगङ्गगञगटगठगडगढगणगतगथगदगधगनगपगफगबगभगमगयगरगलगवगशगषगसगहगळग घकघखघगघघघङघचघछघजघझघञघटघठघडघढघणघतघथघदघधघनघपघफघबघभघमघयघरघलघवघशघषघसघहघळघ ङकङखङगङघङङङचङछङजङझङजङटङठङढङढङणङतङथङदङघङनङपङफङबङभङमङयङरङलङवङशङषङसङहङ**ळ**ङ चकचखचगचघचङचचचछचजचझचञचटचठचडचढचणचतचथचदचधचनचपचफचबचभचमचयचरचलचवचशचषचसचहचळचं छकछखछगछघछङछचछछछजछझछञछटछठछडछढछणछतछथछदछधछनछपछफछबछभछमछयछरछलछवछशछषछसछहछळछ जकजखजगजघजङजचजछजजजझजञजटजठजङजढजणजतजथजदजधजनजपजफजबजभजमजयजरजलजवजशजषजसजहजळज झकझखझगझघझङझचझछझजझझझञझटझठझडझढझणझतझथझदझधझनझपझफझबझभझमझयझरझलझवझशझषझसझहझळझ टकटखटगटघटङटचटछटजटझटजटटटटढटढटणटतटथटदटधटनटपटफटबटभटमटयटरटलटवटशटषटसटहटळट ठकठखठगठघठङठचठछठजठझठञठटठठठडठढठणठतठथठदठघठनठपठफठबठभठमठयठरठलठवठशठषठसठहठळठ डकडखडगडघडङडचडछडजडझडञडटडठडडढढडणडतडथडदडधडनडपडफडबडभडमडयडरडलडवडशडषडसडहडळड ढकढखढगढघढङढचढछढजढझढञढटढठढडढढढणढतढथढदढधढनढपढफढबढभढमढयढरढलढवढशढषढसढहढळढ णकणखणगणघणङणचणछणजणझणञणटणठणडणढणणणतणथणदणधणनणपणफणबणभणमणयणरणलणवणशणषणसणहणळण तकतखतगतघतङतचतछतजतझतञतटतठतडतढतणतततथतदतधतनतपतफतबतभतमतयतरतलतवतशतषतसतहतळत थकथखथगथघथङथचथछथजथझथजथटथठथडथढथणथतथथथदथधथनथपथफथबथभथमथयथरथलथवथशथषथसथहथळथ दकदखदगदघदङदचदछदजदझदजदटदठदडदढदणदत्तदथदददधदनदपदफदबदभदमदयदरदलदवदशदषदसदहदळद धकधखधगधघधङधचधछधजधझधजधटधठधडधढधणधतधथधदधधधनधपधफधबधभधमधयधरधलधवधशधषधसधहधळध नकनखनगनघनङनचनछनजनझनञनटनठनडनढनणनतनथनदनधनननपनफनबनभनमनयनरनलनवनशनषनसनहनळन पकपखपगपघपङपचपछपजपझपञपटपठपडपढपणपतपथपदपधपनपपपफपबपभपमपयपरपलपवपशपषपसपहपळप फकफखफगफघफङफचफछफजफझफञफटफठफडफढफणफतफथफदफधफनफपफफफबफभफमफयफरफलफवफशफषफसफहफ बकवखबगबघबङबचबछबजबझबञबटबठबडबढबणबतबथबदबधबनबपबफबबबभबमबयबरबलबववशबषबसबहबळब भक्तभखभगभघभङभचभछभजभझभञभटभठभडभढभणभत्तभथभदभधभनभपभफभबभभभमभयभरभलभवभशभषभसभहभळभ मकमखमगमघमङमचमछमजमझमञमटमठमडमढमणमतमथमदमधमनमपमफमबमभमममयमरमलमवमशमषमसमहमळम यकयखयगयघयङयचयछयजयझयजयटयठयडयढयणयतयथयदयधयनयपयफयबयभयमयययरयलयवयशयषयसयहयळय रकरखरगरघरङरचरछरजरझरञरटरठरङरढरणरतरथरद्रधरनरपरफरबरभरमरयरररलरवरशरषरसरहरळर लकलखलगलघलङलचलछलजलझलञलटलठलङलढलणलतलथलदलधलनलपलफलबलभलमलयलरलललवलशलषलसलहलळल वकवखवगवघवङवचवछवजवझवञवटवठवडवढवणवत्तवथवदवधवनवपवफवबवभवमवयवरवलवववशवषवसवहवळव शकशखशगशघशङशचशछशजशझशजशटशठशडशढशणशतशथशदशधशनशपशफशबशभशमशयशरशलशवशशशषशमशमशहशळश षकषखषगषघषङ्घचषछषजषझघञषटषठषडषढषणषतषथषदषधषनषपषफषबषभषमषयषरषल्वववशपषघषपष्ठ सकसंखसगसंघसङसंचसछसजसङ्गसञसटसठसङसढसणसतसथसदसधसनसपसफसबसभसमसयसरसलसवसशसषसससहसळस हकहखहगहघहङहचहछहजहझहञहटहठहडहढहणहतहथहदहधहनहपहफहबहभहमहयहरहलहवहशहषहसहहहळह ळकळखळगळघळङळचळघळघळजळझळञळटळठळडळढळणळतळथळदळघळनळपळपळपळषळभळमळयळरळलळवळशळषळसळहळ

०१०२०३०४०५०६०७०८०९०० 009002003008004006000000000000 ११२१३१४१५१६१७१८१९१०१ **१११२११३११४११५११६११७११८११९११०११** 28253585656505758505 558555355855655855055755855055 38323383436303639303 33?332338334333633033733933033 8385838848£8@8783808 88\$885883888488£88088788488088 **५१५२५३५४५५६५७५८५९५०५ ५५१५५२५५३५५**४५५६६५५७५५८५५९५५०५५ £\$£\$£\$£\$£\$£\£\£\\$60\$ 09020308040800000 ८१८२८३८४८५८६८७८८९८०८ 98929398949890929909

 १.१.२.२.३.३.४.४.५.५.६.६.७.७.८.८.९.९.०.०.

 १,१,२,२,३,३,४,४,५,५,६,६,७,७,८,८,९,९,०,०.

पपर्क्किपप	पपर्खिपप	पपर्घ्विपप	पपर्जिपप	पपर्ण्डिपप
पपर्क्खिपप	पपर्ख्पिपप	पपर्ध्सिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ण्हिपप
पपर्क्गिपप	पपर्ख्निपप	पपिद्र्यिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्णिपप
पपर्क्चिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ण्तिपप
पपर्क्छिपप	पपर्खिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्जिपप	पपर्ण्यिपप
पपर्क्जिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्ङ्क्लिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ण्रिपप
पपर्क्झिपप	पपर्ख्विपप	पपर्ङ्क्षीपप	पपर्ज्विपप	पपर्ण्विपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्शिपप	पपङ्गिपप	पपर्झ्किपप	पपर्त्किपप
पपर्क्ठिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ङ्गीपप	पपर्झिपप	पपर्त्खिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्झ्घिपप	पपर्त्तिपप
पपर्क्ढिपप	पपर्ख्त्यपप	पपर्ङ्घीपप	पपर्झ्सिपप	पपर्त्थिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ग्किपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्लिपप
पपर्क्तिपप	पपर्गिपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्झ्निपप	पपर्त्पिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ग्जिपप	पपङ्कीपप	पपर्झ्यिपप	पपर्त्फिपप
पपर्क्दिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्झ्रिपप	पपर्त्बिपप
पपर्क्निपप	पपर्ग्तिपप	पपर्डिंभपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ल्भिपप
पपर्क्पिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्झ्विपप	पपर्त्मिपप
पपर्क्फिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्त्यिपप
पपर्क्बिपप	पपर्ग्निपप	पपर्च्किपप	पपर्ञिपप	पपर्त्रिपप
पपक्रिंपप	पपर्ग्बिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्त्लिपप
पपर्क्मिपप	पपर्ग्भिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्विपप
पपर्क्यिपप	पपर्ग्मिपप	पपर्च्टिपप	पपञ्चिंपप	पपर्त्सिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ग्यिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्यिपप	पपित्क्यिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्डिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्त्क्रिपप
पपर्क्विपप	पपर्ग्लिपप	पपर्च्छिपप	पपट्टीपप	पपर्त्किपप
पपिक्शिपप	पपर्ग्विपप	पपर्च्णिपप	पपर्हिपप	पपर्त्खिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ग्सिपप	पपर्च्तिपप	पपर्हीपप	पपर्त्खिपप पपर्त्खिपप
पपर्क्सिपप	पपग्ध्यिपप	पपर्च्थिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्स्त्रिपप
पपर्क्हिपप	पपग्ध्वंपप	पपर्व्हिपप	_	पपिर्ट्यिपप पपिर्ट्यिपप
पपर्क्ळिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्धिपप	पपर्द्रिपप	पपर्त्प्रिपप पपर्त्प्रिपप
_			पपर्द्रीपप	
पपक्किंपप	पपग्भियपप	पपर्जिपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्यिपप	पपर्द्वीपप	पपर्क्यिपप
पपिक्र्यिपप	पपग्म्यिपप	पपर्चिपप	पपर्हिपप	पपर्त्सिपप
पपर्क्तिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्च्लिपप	पपर्हीपप	पपर्त्स्यिपप
पपिक्यिपप	पपर्ध्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ठिपप	पपर्त्स्विपप
पपिक्स्टिपप	पपर्ध्निपप	पपर्व्सिपप	पपर्ठ्ठ्यपप	पपित्स्न्येपप
पपक्स्डिंपप	पपर्घ्टिपप	पपर्चिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्सिपप	पपर्घ्विपप	पपर्चिपप	पपर्ड्विपप	पपर्थ्यिपप
पपक्स्पिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्थ्मिपप
पपक्स्प्रिपप	पपर्ध्णिपप	पपछ्यिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्प्रिपप	पपर्ध्तिपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्थ्रिपप
पपक्स्प्लिपप	पपर्घ्दिपप	पपर्छ्विपप	पपर्ढ्वीपप	पपर्थ्लिपप
पपर्ख्विपप	पपर्ध्निपप	पपर्ज्किपप	पपर्द्धिपप	पपर्थ्विपप
पपर्ख्ट्पप	पपर्घ्विपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्थ्सिपप
पपर्ख्ठिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्व्ह्यिपप	पपर्द्धिपप
पपर्ख्णिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्जिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्द्धिपप
पपर्ख्तिपप	पपर्घ्रिपप	पपर्ज्तिपप	पपण्टींपप	पपर्द्विपप
पपर्ख्दिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्द्धिपप

पपर्द्विपप पपर्द्धिपप पपर्झिपप पपर्धिपप पपर्दिपप पपर्द्विपप पपर्दध्यिपप पपर्दव्रिपप पपर्द्रियपप पपर्ध्किपप पपर्ध्धिपप पपर्ध्निपप पपध्यिपप पपर्ध्रिपप पपर्ध्लिपप पपर्ध्विपप पपर्ध्सिपप पपर्न्किपप पपर्न्खिपप पपर्न्चिपप पपर्न्छिपप पपन्जिंपप पपर्न्झिपप पपर्न्टिपप पपर्न्ठिपप पपर्न्डिपप पपर्न्हिपप पपर्न्तिपप पपर्न्थिपप पपर्न्दिपप पपर्न्धिपप पपर्न्निपप पपर्न्पिपप पपर्न्फिपप पपर्न्बिपप पपर्भिपप पपर्निपप पपर्न्यिपप पपर्न्निपप पपन्लिपप पपर्न्विपप पपर्न्सिपप पपर्न्हिपप पपन्भ्यपप पपन्भिवपप पपन्म्यिपप पपन्स्टिपप पपन्स्यिपप

पपर्न्ह्यिपप पपन्ज्यिपप पपन्क्सिपप पपन्त्रिपप पपन्त्सिपप पपन्थ्यिपप पपर्न्थिपप पपर्न्द्रिपप पपर्न्द्विपप पपर्स्थिपप पपर्स्थिपप पपर्न्प्रिपप पपन्स्यिपप पपर्किपप पपर्झिपप पपर्प्टिपप पपर्प्ठिपप पपर्शिपप पपर्खिपप पपर्व्हिपप पपर्णिपप पपर्प्तिपप पपर्थिपप पपर्प्दिपप पपर्धिपप पपर्जिपप पपर्प्पिपप पपर्प्किपप पपर्पिपप पपर्प्यिपप पपर्प्रिपप पपर्प्लिपप पपर्प्विपप पपर्ष्मिपप पपर्सिपप पपर्प्ळिपप पपर्प्स्यपप पपर्फिकपप पपिर्जिपप पपर्फ्टिपप पपर्फ्तिपप पपर्फ्टिपप पपिर्निपप पपिर्फिपप पपिर्मिपप पपिर्म्यपप पपर्फ्रिपप पपर्फ्लिपप

पपिर्शिपप पपर्भिनपप पपर्भ्यपप पपर्भ्रिपप पपर्भ्लिपप पपर्भ्वपप पपिर्ध्यपप पपर्म्तिपप पपर्म्दिपप पपर्म्निपप पपर्म्पिपप पपर्म्बिपप पपर्मिपप पपर्मिपप पपर्म्यिपप पपर्म्रिपप पपर्म्लिपप पपर्म्विपप पपर्म्शिपप पपर्म्सिपप पपर्म्हिपप पपम्मिर्यपप पपर्म्प्रिपप पपम्ब्यिपप पपर्म्बिपप पपम्भिर्यपप पपर्म्भिपप पपम्भिर्वपप पपर्थ्यिपप पपर्ग्रिपप पपर्निपप पपर्व्यिपप पपर्विपप पपर्व्लिपप पपर्व्सिपप पपर्व्हिपप पपर्ल्किपप पपर्ल्खिपप पपर्लिगपप पपर्ल्चिपप पपर्ल्जिपप पपर्ल्टिपप पपर्ल्ठिपप पपर्ल्डिपप पपर्ल्हिपप पपर्ल्तिपप पपर्ल्थिपप

पपर्ल्दिपप

पपर्ल्पिपप पपर्ल्फिपप पपर्ल्बिपप पपर्ल्भिपप पपर्ल्मिपप पपर्ल्यिपप पपर्लिपप पपर्ल्विपप पपर्ल्सिपप पपर्ल्हिपप पपल्ल्यिपप पपर्ल्ह्यिपप पपल्क्यिपप पपर्ल्थ्यिपप पपर्ल्हिपप पपर्श्किपप पपर्श्विपप पपर्श्चिपप पपर्श्छिपप पपर्श्टिपप पपर्श्तिपप पपर्श्निपप पपर्श्विपप पपर्श्मिपप पपर्श्यिपप पपर्श्रिपप पपर्श्लिपप पपर्श्विपप पपर्शिपप पपर्श्यिपप पपर्स्किपप पपर्स्खिपप पपर्स्छिपप पपर्स्जिपप पपर्स्टिपप पपर्स्टिपप पपर्स्डिपप पपर्स्हिपप पपर्स्तिपप पपर्स्थिपप पपर्स्दिपप पपर्स्निपप पपर्स्पिपप पपर्स्फिपप पपर्स्बिपप पपर्स्मिपप पपर्स्यिपप पपर्स्रिपप

पपर्स्लिपप पपर्स्विपप पपर्स्सिपप पपस्मियपप पपर्स्क्रिपप पपस्त्यिपप पपस्थियपप पपस्मियपप पपस्त्विपप पपर्स्प्रिपप पपस्न्यिपप पपह्लिपप पपर्हितपप पपर्ह्यिपप पपर्ह्मिपप पपर्हिम्यपप पपर्ह्विपप पपर्हिपप पपह्लिपप पपर्ह्विपप पपर्ह्विपप पपर्ळ्यिपप पपर्ळ्पिपप पपर्ळिपप पपर्ध्यिपप पपर्क्षिपप पपर्द्विपप

Conjuncts and word testing

तरक्क्री ज़्यादा मन्ज़्र इलेक्ट्रान स्ट्रीटकार छुट्टी महाराष्ट्र ज्येष्ठ दर्षांत चिट्ठी वाङ्मय वैशिष्ट्य पुनस्स्थापना स्वास्थ्य कम्प्यूटर सान्ध्य इज़्जत उज्ज्वल प्राप्त्याशा इकत्तीस सत्रह पद्म विद्यार्थी उन्नीस पश्चिम श्रीलंका विश्वविद्यालय स्नान बुद्ध आह्राद ब्राह्मण मिस्त्री दुष्प्रह्य

अद्भुत इल्जाम अक्षरे ज्ञान मौके कैंटोमेंट छूट कुछ करेंट राष्ट्रन कॉफी हिंदू-मुस्लिम

करणाऱ्या

स्नेह

श्री

स्त्री ध्डयां शक्ति महाराष्ट्र कट्टू रूप हूँ बुत्तो बार्गी कुंग हूप फ्रीज ह्रितिक एल्ज़े उत्त्य उत्य रत्न सज्स एज्जा ब्यर्थे तरक्क्री फ्रैक्चर डॉक्टर इलेक्ट्रॉन रक्त

> वक्त्र युक्त्यभास वक्रफ़ शुक्ल रिक्शा पक्ष लक्ष्मी अभक्ष्य दिक्स्थापन सख़्त अख्त्यार ज़ख़्म ख्रिष्टां फ़ख अग्ग्रास मग्ज सम्यग्ज्ञान दिग्दर्शन पंक्ति मंगलवार दर्लुंघ्य

पच्चीस

अच्छा

उज़ संस्कृत हिंस्र छुट्टी चिट्ठी विशाखपद्मम ट्रैन सुपाठ्य लड्डू ब्रह्मण्य उत्क्रम उत्क्षेप विद्युत्प्रहक महत्त्व पत्थर विद्युत्दर्शी पत्नी सपत्न्य उत्प्रवास त्र्याहिक विद्युतशक्ति हत्स्थल ज्योत्स्ना ईषत्स्पृष्ट् उत्स्रुत सद्गति सद्गन्थ उद्घाटन ज़िद्दी प्रसिद्ध उद्बोध द्रव दारिद्रय अध्रुव मंज़ूर मंत्री स्वातंत्र्य द्वंद्व उन्नीस

इंस्टिट्यूट

उन्हें

दीन्ह्यो

नैप्स्यून

प्राप्त

सब्जी

छब्बीस

मार्किट

दर्जु्ञेय उर्दू निर्द्वन्द्व सिर्फ व्हिस्की इश्क्र प्रश्न रुश्द वैशिष्ट्य ओष्ट्य मिस्त्री आह्वान आह्राद ह्रास अंकुड़ा अंतर्निहित अन्तः अंतर्वेशन अग्नि अद्भुत छुछुंदर हंकार हित इच्छुक कुर्री कुल्हिया नूपुर क्षूद्र ध्रुतराष्ट्र दुःख सुष्ट्रतिम यक्रीनन की फ्रीडम फ्रीडम न्यूक्लियर ऽनश्वदां हफ़्ते ईं

सुकाज सरसराहट सुधारविरोधी चल कोने होनेवाला कलहकारिता गठबंधनहीन बाजे परिदाय मितीकाटे एव मुषक तगर उदजन लख एकजुट द पोखरा रोल मामलों अजय उभय मांडिलकता दयाविहीनता लोउ वकीलों पग जी तो बहरुपिया विपदा जलपीटिका ड वेदिका साए कमीं मेहमानदारी वजह परेत हिकमती दुखदायी वेणा ऊष घराता वररुचि गिरजाधिकारी लोन म रीतिवाद मतानुगामी पतालेखी चांद न मुहावरा चंदक अचार अनमुरझाया नन दपट अधिवानर कामांध दंडिषिकारी दुलहन धुनी ससंझवाती रचेता धिग सरदल अवीरा सुनागरता बीमा रम नमकदान मतानुगिमता धो इ सोमाद ब खील सरलरेखाकारा वासवी अनुमानहीनता वद मेढ ढंकी ज मांसाहार सुपरिपाति जमाना दंय ब नर केन महता परंजय मुबारकबादी बबुई वाकिफकारी याद असवांगीणता अनुकंपनीयता डाईमेकर नदनु नापदड सोलही कणरी

सुकाज सरसराहट सुधारविरोधी चल कोने होनेवाला कलहकारिता गठबंधनहीन बाजे तगर उदजन लख एकजुट द पोखरा रोल मामलों अजय उभय मां-डिलकता दयाविहीनता लोउ वकीलों पग जी तो मतानुगामी पतालेखी चांद न मुहावरा चंदक अचार अनमुरझाया नन दपट अधिवानर कामांध दंडाधिका-री दुलहन धुनी ससंझवाती रचेता धिग सरदल अवीरा सुनागरता बीमा रम नमकदान मतानुगमिता धो इ सोमाद ब खील सरलरेखाकारा वासवी अनुमा-नहीनता वद मेढ ढंकी ज मांसाहार सुपरिपाति जमाना दंय ब नर केन महता परंजय मुबारकबादी बबुई वाकिफकारी याद असवांगीणता अनुकंपनीयता डाईमेकर नदनु नापदड सोलही कणरी एकाधिकारवाद

प्राप्त है। भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक, सिंधु घाटी सभ्यता का विकास स्थान था, और तब से ऐतिहासिक व्यापार पथों का अभिन्न अंग रहा है. चार् प्रमुख धर्मों : सनातन-हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा सिख का उद्भव और विकास भारत में हुआ और यहूदी, ईसाई, पारसी और ईस्लाम धर्म प्रथम सहस्राब्दी में भारत में आये, और भारत की विविध संस्क्रिति को जन्म दिया। भारत भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा राष्ट्र है। भारत की रजधानी नई दिल्ली है। भारत के अन्य बड़े महानगर मुम्बई (बम्बई), कोलकाता (कलकत्ता) और चेन्नई (मद्रास) हैं। क्रमिक विजयों के परिणामस्वरूप ब्रिटिश ईस्ट ईण्डिय ने १८वीं और १९वीं सदी में भारत के ज्यादतर हिस्सों को अपने राज्य में मिला लिया। १८५७ के विफल विद्रोह के बाद भारत के प्रशासन का भार ब्रिटिश सरकार ने अपने ऊपर ले लिया। ब्रिटिश भारत के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रमुख अंग भारत ने १९४७ में महात्मा गांधी के नेतृत्व में एक लम्बे और मुख्य रूप से अहिंसक स्वतन्त्रता संग्राम के बाद आजादी

पाई। १९५० में लागू हुए नये संविधान में इसे सार्वजिनक वयस्क मताधिकार सम्पन्न संवैधानिक लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित कर दिया गया और युनाईटेड किंगडम की तर्ज़ पर वेस्टिमेंस्टर शैली की संसदीय सरकार स्थापित की गयी। लम्बे समय तक समाजवादी आर्थिक नीतियों का पालन करने के बाद विगत २० वर्ष में भारत ने उदारीकरण और वैधी-करण की नयी नीतियों के आधार पर सार्थक आर्थिक और सामाजिक प्रगति की है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था क्रय शक्ति समता के आधार पर विश्व की चौथी और मानक मूल्यों के आधार mumbai पर विश्व की दसवीं सबसे बडी अर्थव्यवस्था है। भारतीय सेना एक क्षेत्रीय शक्ति है। प्राचीन हिन्दू पुराणों के अनुसार भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव-सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कन्ध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। भारतीय दर्शन के अनुसार सृष्टि उत्पत्ति के पश्चात ब्रह्मा के मानस पुत्र स्वयंभू मनु ने व्यवस्था सम्भाली। इनके दो पुत्र, प्रियव्रत और उत्तानपाद थे। उत्तानपाद भक्त ध्रुव के पिता थे। इन्हीं प्रियव्रत के दस पुत्र थे। तीन पुत्र बाल्यकाल से ही विरक्त थे। इस कारण प्रियव्रत ने पृथ्वी को सात भागों में विभक्त कर एक-एक भाग प्रत्येक पुत्र

इन्हीं में से एक थे आग्नीध्र जिन्हें जम्बूद्वीप का शासन कार्य सौंपा गया। वृद्घावस्था में आग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों को जम्बूद्वीप के विभिन्न नौ स्थानों का शासन दायित्व सौंपा। इन नौ पुत्रों में सबसे बड़े थे नाभि जिन्हें हिमवर्ष का भू-भाग मिला। इन्होंने हिमवर्ष को स्वयं के नाम अजनाभ से जोड़ कर अजनाभवर्ष प्रचारित किया। यह हिमवर्ष या अजनाभवर्ष ही प्राचीन भारत देश था। राजा नाभि के पुत्र थे ऋषभ। ऋषभदेव के सौ पुत्रों में भरत ज्येष्ठ एवं सबसे गुणवान थे। ऋषभदेव ने वानप्रस्थ लेने पर उन्हें राजपाट सौंप दिया। पहले भारतवर्ष का नाम ऋषभदेव के पिता नाभिराज के नाम पर अजनाभवर्ष प्रसिद्ध था। भरत के नाम से ही devanagari लोग अजनाभखण्ड को भारतवर्ष कहने लगे। में अपनी स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने ज्यादातर देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा है। १९५० के दशक में, भारत ने दृढ़ता से अफ्रीका और एशिया में यूरोपीय कालोनियों की स्वतंत्रता का समर्थन किया और गुट निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। १९८० के दशक में भारत ने आमंत्रण

पर्तनासु दुष्टरा या वाजेषु शरवाय्या। या पञ्च चर्षणीर अभृन्द्राग्नी ता हवामहे॥ तयोर इद अमवच छवस तिग्मा दिद्युन मघोनोः। परति दरुणा गभस्त्योर गवां वर्त्रघ्न एषते॥ ता वाम एषे रथानाम इन्द्राग्नी हवामहे। पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा॥ ता वर्धन्ताव अनु दयून मर्ताय देवाव अदभा। अर्हन्ता चित पूरो दधे ऽंशेव देवाव अर्वते॥ एवेन्द्राग्निभ्याम अहावि हव्यं शूष्यं घर्तं न पूतम अद्रिभिः। ता सूरिषु शरवो बर्हद रियं गर्णत्सु दिध्तम इषं गर्णत्सु दिध्तम॥आ वां नरा पुरुभुँजा वद्र्यां दिवे-दिवे चिद्द अश्विना सखीयन॥ युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बहुतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविद एक इन मही देवस्य सवितः परिष्टतिः॥ विश्वा रूपाणि परति मुञ्जते कविः परासावीद भद्रं दविपदे चतुष्पदे। वि नाकम अख्यत सविता वरेण्यो ८नु परयाणम उषसो वि राजति॥ यस्य परयाणम अन्व अन्य इद ययुर देवा देवस्य महिमानम ओजसा। यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना॥ उत यासि सवितस तरीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः सम उच्यसि। उत रात्रीम उभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः॥ उतेशिषे परसवस्य तवम एक इद उत पूषा भवसि देव यामभिः। उतेदं विश्वम भुवनं वि राजसि शयावाश्वस ते सवित सतोमम आनशे॥परित परयाणम असुरस्य विद्वान सुक्तैर देवं सवितारं दुवस्य। उप बरुवीत नमसा विजानञ जयेष्ठं च रत्नं विभजन्तम आयोः॥ अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर वस्त उसः। इन्द्रो विष्णुर वरुणो मित्रो अग्निर अहानि भद्रा जनयन्त दस्माः॥ तन नो अनर्वा सविता वरूथं तत सिन्धव इषयन्तो अनु गमन। उप यद वोचे अध्वरस्य होता रायः सयाम पतयो वाजरत्नाः॥ पर ये वसुभ्य ईवद आ नमो दुर ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः। अवैत्व अभ्वं कर्णुता वरीयो दिवस्प्र्थिव्योर अवसा मदेम॥र शर्धाय मारुताय सवभानव इमां वाचम अनजा पर्वतच्युते। घर्मस्तुभे दिव आ पर्षयज्वने दयुम्नेश्रवसे महि नर्म्णम अर्चत॥ पर वो मरुतस तविषा उदन्यवो वयोद्र्यो अश्वयुजः परिज्रयः। सं विद्युता द्रधति वाशति तरितः सवरन्त्य आपो ऽवना परिज्रयः॥ विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातित्विषो मरुतः पर्वतच्युतः। अब्दया चिन मुहर आ हरादुनीव्रत सतनयदमा रभसा उदोजसः॥ वय अक्तृन रुद्रा वय अहानि शिक्वसो वय अन्तरिक्षं वि रजांसि धृतयः। वि यद अज्रां अजथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ॥ तद वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम। एता न यामे अग्र्भीतशोचिषो ऽनश्वदां यन नय अयातना गिरिम॥ अभ्राजि शर्धों मरुतो यद अर्णसम मोषथा वर्क्षं कपनेव वेधसः। अध समा नो अरमितं सजोषसश चक्षर इव यन्तम अनु नेषथा सुगम॥ न स जीयते मरुतो न हन्यते न सरेधित न वयथते न रिष्यति। नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय रिषं वा यं राजानं वा सुषुद्ध्य॥ नियुत्वन्तो गरामजितो यथा नरो ऽरयमणो न मरुतः कबन्धिनः। पिन्वन्त्य उत्सं यद इनासो अस्वरन वय उन्दन्ति पर्थिवीम मध्वो अन्धसा॥ परवत्वतीयम पर्थिवी मरुद्भ्यः परवत्वती दयौर भवति परयद्भ्यः। परवत्वतीः पथ्य अन्तरिक्ष्याः परवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः॥ यन मरुतः सभरसः सवर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः। न वो ऽशवाः शरथयन्ताह सिस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारम अश्रुथ॥ अंसेषु व रष्टयः पत्सु खादयो वक्षस्सु रुक्मा मरुतो रथे शुभः। अग्निभाजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः॥ तं नाकम अर्यो अग्नीतशोचिषं रुशत पिप्पलम मरुतो वि धुनुथ। सम अच्यन्त वर्जनातित्विषन्त यत सवरन्ति घोषं विततम रतायवः॥ युष्पादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः सयाम रथ्यो वयस्वतः। न यो युछति तिष्यो यथा दिवो ऽसमे रारन्त मरुतः सहस्रिणम्॥ ययं रियम मरुत सपार्हवीरं यूयम रिषम अवर्थ सामविप्रम्। यूयम अर्वन्तम भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं शरुष्टिमन्तम्॥ तद वो यामि दरविणं सद्यूतयो येना सवर ण ततनाम नृंर अभि। इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः॥हयो न विद्वां अयुजि सवयं धरि तां वहामि परतरणीम अवस्युवम। नास्या वश्मि विमुचं नाव्रतम पुनर विद्वान पथः पुरेत रजु नेषति॥ अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः पर यन्त मारुतोत विष्णो। उभा नासत्या रुद्रो अध गनाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त॥ इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं सवः पर्थिवीं दयाम मरुतः पर्वतां अपः। हवे विष्णुम पूषणम बरह्मणस पतिम भगं नु शंसं सवितारम ऊतये॥ उत नो विष्णर उत वातो असिधो दरविणोदा उत सोमो मयस करत। उत रभव उत राये नो अश्विनोत तवष्टोत विभवान मंसते॥ उत तयन नो मारुतं शर्ध आ गमद दिविक्षयं यजतम बर्हिर आसदे। बर्हस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद वरूथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा॥ उत तये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस तरामणे भुवन। भगो विभक्ता शवसावसा गमद उरुव्यचा अदितिः शरोतु मे हवम॥ देवानाम पत्नीर उशतीर अवन्तु नः परावन्तु नस तुजये वाजसातये। याः पार्थिवासो या अपाम अपि वरते ता नो देवीः सहवाः शर्म यछत्।। उत गना वयन्तु देवपत्नीर इन्द्राण्य अग्नाय्य अश्विनी राट। आ रोदसी वरुणानी शर्णोतु वयन्तु देवीर य रतुर जनीनाम॥मनुष्वत तवा नि धीमहि मनुष्वत सम इधीमहि। अग्ने मनुष्वद अङगिरो देवान देवयते यज॥ तवं हि मानुषे जने ८गने सुप्रीत इध्यसे। सरुचस तवा यन्त्य आनुषक सुजात सर्पिरासुते॥ तवां विश्वे सजोषसो देवासो दत्तम अक्रत। सपर्यन्तस तवा कवे यज्ञेषु देवम ईळते॥ देवं वो देवयञ्चयाग्निम ईळीत मर्त्यः। सिमद्धः शुक्र दीदिह्य रतस्य योनिम आसदः ससस्य योनिम आसदः॥अग्निं तम मन्ये यो वसुर अस्तं यं यन्ति धेनवः। अस्तम अर्वन्त आशवो ऽसतं नित्यासो वाजिन इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ सो अग्निर यो वसुर गर्णे सं यम आयन्ति धेनवः। सम अर्वन्तो रघुद्रवः सं सुजातासः सूरय इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ अग्निर हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः। अग्नी राये सवाभुवं स परीतो याति वार्यम इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ आ ते अग्न इधीमहि दयुमन्तं देवाजरम। यद ध सया ते पनीयसी समिद दीदयति दयवीषं सतोत्रभ्य आ भर॥ आ ते अग्र रचा हविः शुक्रस्य शोचिषस पते। सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट तुभ्यं हूयत इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ परो तये अग्रयो ऽगनिषु विश्वम पुष्यन्ति वार्यम। ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्य आनुषग इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ तव तये अग्ने अर्चयो महि वराधन्त वाजिनः। ये पत्विभः शफानां वरजा भरन्त गोनाम इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ नवा नो अग्न आ भर सतोत्रभ्यः सुक्षितीर इषः। ते सयाम य आज्ञ्चस तवादृतासो दमे-दम इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी शरीणीष आसिन। उतो न उत पुपूर्या उक्थेषु शवसस पत इषं सतोत्रभ्य आ भर॥ एवां अग्निम अजुर्यमुर गीर्भिर यज्ञेभिर आनुषक। दधद अस्मे सुवीर्यम उत तयद आश्वश्व्यम इषं सतोत्रभ्य आ भर॥तर्ये अर्यमा मनुषो देवताता तरी रोचना दिव्या धारयन्त। अर्चन्ति तवा मरुतः पूतदक्षास तवम एषाम रिषर इन्द्रासि धीरः॥ अनु यद ईम मरुतो मन्दसानम आर्चन्न इन्द्रम पपिवांसं सुतस्य। आदत्त वज्रम अभि यद अहिं हन्न अपो यह्वीर अरुजत सर्तवा उ॥ उत बरह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः। तद धि हव्यम मनुषे गा अविन्दद अहन्न अहिम पिपवां इन्द्रो अस्य॥ आद रोदसी वितरं वि षकभायत संविव्यानश चिद भियसे मर्गं कः। जिगर्तिम इन्द्रो अपजर्गुराणः परित शवसन्तम अव दानवं हन॥ अध करत्वा मघवन तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम। यत सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीर उपरा एतशे कः॥ नव यद अस्य नवतिं च भोगान साकं वज्रेण मघवा विक्क्षत। अर्चन्तीन्द्रम मरुतः सधस्थे तरैष्टभेन वचसा बाधत दयाम॥ सखा सख्ये अपचत त्यम अग्निर अस्य करत्वा महिषा तरी शतानि। तरी साकम इन्द्रो मनुषः सरांसि सुतम पिबद वर्त्रहत्याय सोमम॥ तरी यच छता महिषाणाम अघो मास तरी सरांसि मघवा सोम्यापाः। कारं न विश्वे अह्नन्त देवा भरम इन्द्राय यद अहिं जघान॥ उशना यत सहस्यैर अयातं गर्हम इन्द्र जुजुवानेभिर अश्वैः। वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कृत्सेन देवैर अवनोर ह शृष्णम॥ परान्यच चक्रम अव्हः सूर्यस्य कृत्सायान्यद वरिवो यातवे ऽकः। अनासो दस्यूर अम्र्णो वधेन नि दुर्योण आव्र्गाङ मर्ध्रवाचः॥ सतोमासस तवा गौरिवीतेर अवर्धन्न अरन्धयो वैदिथिनाय पिप्रम। आ तवाम रजिश्वा सख्याय चक्रे पचन पक्तीर अपिंबः सोमम अस्य॥ नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्य अर्चन्त्य अर्कैः। गव्यं चिद ऊर्वम अपिधानवन्तं तं चिन नरः शशमाना अप वरन॥ कथो नु ते परि चराणि विद्वान वीर्य्र मघवन या चकर्थ। या चो नु नव्या कर्णवः शविष्ठ परेद उ ता ते विद्येषु बरवाम॥ एता विश्वा चक्रवां इन्द्र भूर्य अपरीतो जनुषा वीर्येण। या चिन नु विज्ञन कर्णवो दध्ध्वान न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः॥ इन्द्र बरह्म करियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म। वस्त्रेव भद्रा सुक्रता वसूयू रथं न धीरः सवपा अतक्षम॥ आ यज्ञैर देव मर्त्य इत्था तव्यांसम ऊतये। अग्निं कर्ते सवध्वरे पूरुर ईळीतावसे॥ अस्य हि सवयशस्तर आसा विधर्मन मन्यसे। तं नाकं चित्रशोचिषम मन्द्रम परो मनीषया॥ अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा। दिवो न यस्य रेतसा बर्हच छोचन्त्य अर्चयः॥ अस्य करत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ। अधा विश्वासु हव्यो ऽगनिर विक्षु पर शस्यते॥ नू न इद िंध वार्यम आसा सचन्त सूरयः। ऊर्जो नपाद अभिष्टये पाहि शिष्धि सवस्तय उतैधि पर्त्सु नो वर्धे॥अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्नया। आ देवान विक्ष यक्षि च॥ तं तवा घर्तस्नव ईमहे चित्रभानो सवर्द्रशम। देवां आ वीतये वह॥ वीतिहोत्रं तवा कवे देयुमन्तं सम इधीमहि। अग्ने बर्हन्तम अध्वरे॥ अग्ने विश्वेभिर आ गहि देवेभिर हव्यदातये। होतारं तवा वर्णीमहे॥ यजमानाय सुन्वत आग्ने स्वीर्यं वह। देवैर आ सित्सं बर्हिषि॥ सिमधानः सहस्रजिद अग्ने धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः॥ नय अग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम। दधाता देवम रत्विजम॥ पर यज्ञ एत्व आनुषग अद्या देवव्यचस्तमः। सत्र्गीत बर्हिर आसदे॥ एदम मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा॥यस ते साधिष्ठो ऽवस इन्द्र करतुष टम आ भर। अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दृष्टरम्। यद इन्द्र ते चतस्रो यच छर सन्ति तिस्रः। यद वा पञ्च कषितीनाम अवस तत सु न आ भर। आ ते ऽवो वरेण्यं

दादर रेलुवे स्टेशनच्या प्लॅटफॉर्म क्रमांक ६वरील ओव्हरहेड वायरवर झाड कोसळल्याने सीएसटीकडे जाणारी अपफास्ट मार्गवरील वाहतूक विस्कळीत झाली होती. मात्र या मार्गावरील दुरुस्तीचे काम पूर्ण झाले असून रेलवेचे वेळापत्रक पूर्वपदावर येऊ लागले आहे. दादरच्या प्लॅटफॉर्म क्रमांक ६वरील ओव्हरहेड वायरवर सहाच्या सुमारास एक झाड कोसळले. या मुळे ओव्हरहेड वायर तुटून सीएसटीकडे जाणाऱ्या अप फास्ट मार्गावरील वाहतूक बंद पडली. या मार्गावरील गाड्या धीम्या मार्गावर वळवण्यात आल्या. त्यामुळे ऐन गर्दीच्यावेळी गाड्या सुमारे २० ते २५ मिनिटे धावू लागल्या होत्या. डाऊन मार्गावरील अनेक गाड्या रेल्वेकडून रह् करण्यात आलुया. दरम्यान, झांड हटवण्याचे हे काम पूर्ण होण्यासाठी दोनतास लागलुयाने वाहतूक पूर्ववत होईपर्यंत प्रवाशांना त्रास सहन करावा लागला. सिनेमा थिएटरवर लावला जातो. सिंगल स्क्रीन आणि मलिटप्लेक्स अशा दोन पद्धतीच्या थिएटर्समध्ये तो लागतो. कोणत्या शोला किती कलेक्शन झालं, याचा रितसर ई-मेल थिएटरकडून वितरकाला, निर्मात्यांना येत असतो. याला 'डीसीआर' अर्थात डेली कलेक्शन रिपोर्ट म्हणतात. 'मलिटप्लेक्स'वाले दर खेळाच्या दसऱ्या दिवशी ई-मेलवरून आदल्या दिवसाचं कलेक्शन कळवत असतात. थिएटरच्या सीट्स, झालेलं बुकिंग अशी सगळी माहिती यात असते. सिंगल स्क्रीनवाल्यांची पद्धत मात्र वेगळी आहे. इथे रोज ई-मेल पाठवला जात नाही. तर सिनेमाला मिळणारा प्रतिसाद रोज फोनवरून कळवला जातो. वितरक, निर्माते 'त्या' फोनवर विसंबून असतात. उदाहरणार्थ, चंद्रपूरमधल्या १०० सीट्सच्या सिंगल स्क्रीनवाल्याने 'शो हाऊसफुल्ल'ची ग्वाही फोनवरून दिली की शंभर तिकीटांचा रेट एकूण कलेक्शनमध्ये 'ॲड' केला जातो. समजा महाराष्ट्रात एकूण १०० सिंगल स्क्रीन्सवर सिनेमा लागला असेल, तर या फोनवरून या शंभर थिएटर्सचं कलेक्शन गृहित धरलं जातं. या सिंगल स्क्रीनवाल्यांचाही 'डीसीआर' असतो. पण, सिनेमा लागल्यावर आठवड्याभरानंतर तो डीसीआर येतो. त्यावेळेपासून सिंगल स्क्रीन्सचं किमान चित्र स्पष्ट व्हायला सुरूवात होते. यातली दुसरी गोम अशी की, सिंगल स्क्रीन्सची ही आकडेमोड सरधोपट असते. म्हणजे १०० खुर्च्याँपैकी ८० खुर्च्या भरलया की 'सिंगल स्क्रीन'वाल्यांसाठी शो 'हाऊसफुलल' असतो. त्यांच्या लेखी २० रिकाम्या खुर्च्यांना 'किंमत' नसते. अशी गत १०० पैकी ६० थिएटर्समध्ये असते. तरीही महाराष्ट्रातून मुंबईपर्यंत आलेला रिपोर्ट 'सर्वत्र हाऊसफुलुल' असतो. 'सिंगल'वाल्यांचा आठवडाभरानंतर 'डीसीआर' आल्यावर त्यात या रिकाम्या खुर्च्यांची दखल दिसते. पण तोवर कलेक्शनच्या अंदाजांचा फुगा हवेत उंच झोकांड्या घेत असतो. हकमी एक्का बुकिंगचा बुकिंगचे सगळे ताळे खोटे असतात असं नाही. ज्या सिनेमांची चर्चा कोटींमध्ये होते, त्यांच्याकडे निश्चित गर्दीचा प्रवाह असतो. परंतु, त्यासाठी काही स्ट्रॅटेजी प्लॅन केल्या जातात. बड्या, कार्पोरेट निर्माते-कंपन्यांनाच हे शक्य होतं. मिलटप्लेक्ससाठी तर 'नेट बुकिंग'च पर्याय स्वीकारला जातो. अशावेळी या कंपन्या ऑफिसमधून मिलटप्लेक्सचे शोच्या शो बुक करतात. मग, शो हाऊसफुलुल 'दिसतो'.

पॅकेजिंग प्रिंटर, बुक बाइंडर, मार्केटिंग अँड सेल्स, प्रॉडक्शन ऑपरेशन सेल्स आणि कस्टमर सर्व्हिस इत्यादी. अशा प्रिंटिंग क्षेत्राचे शिक्षण देणाऱ्या संस्था महाराष्ट्रातही आहेत. या क्षेत्राचा अधिक अभ्यास, रिसर्च करायची इच्छा असल्यास त्यांना परदेशामध्येही मोठा वाव आहे. रिंटिंगचा विस्तार आपण बाजारामध्ये कोणतीही वस्तु खरेदी करायला गेलो, तर साध्या पेनपासून, प्लॅस्टिक पिशव्या, गिफ्ट आर्टिकल, गृहोपयोगी वस्तु अशा अनेक गोष्टींवर प्रिंटिंग केलेले आपल्या-ला आढळते. या वस्तूंचे सुरेख पॅकिंग करण्यासाठीसुद्धा पॅकेजिंग इंडस्ट्री, पॅकिंग प्रिंटिंग यांचा व्यवसाय मोठ्या प्रमाणात वाढतो आहे. वह्या, प्रस्तके, गाइड, संदर्भग्रंथ, फ्लेक्स, निरनिराळ्या जाहिराती यांची छपाई आता टेक्नॉलॉजीमुळे सोपी झालेली आहे. रिंटिंगमधील तंत्रज्ञान रिंटिंगमध्ये स्क्रीन प्रिंटिंग, ऑफसेट प्रिंटिंग, लेटरप्रेस, वेब ऑफसेट, फ्लेक्सोग्रा-फी, ग्रेव्हियर अशा अनेक प्रकारच्या तंत्रज्ञानाने सध्याचे प्रिंटिंग क्षेत्र व्यापले आहे. या शिवाय विविध रंग एकाच वेळी छपाई करण्याचे तंत्रही विकसित झाले आहे. अगदी एका रंगापासून ते सहा रंगांपर्यंत छपाई करण्याची यंत्रे सज्ज आहेत. मशिनची निर्मितीसुद्धा त्यानुसार होत आहे. अभ्यासक्रमात काय? या अभ्यासक्रमामध्ये सर्व प्रकारच्या प्रिंटिंग प्रोसे-सेस, टेक्नॉलॉजी व सिस्टिम्सचा विस्तृत अभ्यासक्रम आहे. यामध्ये ऑफसेट प्रिंटिंग, फ्लेक्सोग्राफी, डिजिटल इमेज अँड प्रिंटिंग याशिवाय पॅकेज डिझाइन, इंक, पेपर अँड बोर्ड्स या सर्वांचा इंजिनीअरिंगच्या दृष्टीने अभ्यास केला जातो. या अभ्यासक्रमात मूलभूत इंजिनीअरिंग शाखांचा जवळपास ४० टक्के समावेश आहे. संधी यांत्रिकी, इलेक्ट्रिकल अभ्या-सक्रम पूर्ण झाल्यानंतर प्रिंटिंग आणि पॅकेजिंगमधील टेट्रा पॅक, थॉमसन प्रेस, हिंदुस्थान इंक्स, टेक्नोव्हा, बल्लारपूर पेपर इंडस्ट्री यांसारख्या नामवंत कंपन्यांमध्ये संधी उपलब्ध होते; व्यक्तिमत्त्वांसाठी हे क्षेत्र आव्हानात्मक तर आहेच; पण त्या-चबरोबर त्यांच्या कौशल्याला वाव आणि न्याय देणारे हे क्षेत्र आहे. सेल्स, मार्केटिंग, प्रॉडक्शन, सर्व्हिस एजन्सी, डीलर, मेंटेनन्स, डिस्ट्रिब्युटर, पॅकेजिंग, ॲडव्हर्टायझिंग, पेजमेकर, कोरल ड्रॉ, फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, इनडिझाइन या प्रोग्राममुळे लागणारी चित्रे, फोटोंची रचना, डीटीपी याही क्षेत्रांत संधी आहेत. प्रवेश कोण घेऊ शकते? अर्थात, या संधी घेण्या-साठी काय करायचे? या वर्षी दहावीला बसलेल्या विद्यार्थ्यांना या संधीचा फायदा घेता येईल. दहावीच्या परीक्षेमध्ये ज्या विद्यार्थ्यांना ५० टक्क्यांपेक्षा जास्त गुण मिळतील, अशा सर्व विद्यार्थ्यांना प्रिंटिंगच्या पदविका अभ्यासक्रमास प्रवेश मिळू शकेल. याशिवाय अनुसूचित जाती-जमातीच्या विद्यार्थ्यांना ४५ टक्के गुणांना प्रवेश मिळू शकतो. काही अभ्यासक्रम दहावी नापास, कमी गुण पडलेले विद्यार्थी यापासून ते बारावी पास झालेले किंवा ग्रॅज्युएशन पास झालेल्या विद्यार्थ्यांना पर्ण करता येतात.